B.A. (Hons) Part III
Philosophy Paper V
Topic _ Animism (जीववाद)

Dr. Sachidanand Prasad.
Dept. of Philosophy.
R.R.S. College, Mokama.

जीववाद आदिम धर्म का प्रथम विकसित धारणा है। टायलर के अनुसार धर्म की उत्पत्ति जीववादी सिद्धान्त से हुई है। जीववाद Animism शब्द का अनुवाद है जहाँ Anima का अर्थ जीवन का श्वास, आत्मा है। जीववाद के अनुसार प्रकृति की सभी वस्तुओं में एक जीव निवास करता है। इसप्रकार जीववाद का अर्थ है — वह विश्वास जिसके आधार पर लोग सभी चीजों में जीव या आत्मा को व्याप्त मानते हैं। अर्थात जीव के बिना कहीं भी गति या क्रिया नहीं हो सकती है। जीव या आत्मा के स्वरूप की व्याख्या करते हुए टायलर ने कहा है कि यह एक प्रकार की छाया है। जिसप्रकार मानव के पास आत्मा निवास करती है ठीक उसीप्रकार विश्व की सारी वस्तुओं में आत्मा सन्निहित है। उदाहरण के लिए नदी, बादल, वृक्ष, पशु, पक्षी में एक आत्मा है जो एक छाया के समान है। इसप्रकार विश्व का आधार चेतना है। मानव अपने अनुरूप विश्व की प्रत्येक वस्तु में आत्मा का दर्शन करता है। मानव के समान ही विश्व की प्रत्येक

(2)

वस्तु चेतनमय है। इस सिद्धान्त के अनुसार मानव उन वस्तुओं की पूजा करता है जो उसे आराम पहुँचाते हैं। इसके अलावे मानव इन वस्तुओं की भी आराधना करने के लिए बाध्य हो जाता है जो उसके लिए भयप्रद होते हैं। उदाहरण के लिए झरना, कल्पवृक्ष पेड़, नाग, बाघ इत्यादि की पूजा आज भी लोग करते हैं। इसप्रकार जीववाद ने धर्म के विचार को जटिल बनाकर धर्म के इतिहास में योगदान किया है।

आलोचना - जीववाद को धार्मिक आस्था कहना अनुचित जान पड़ता है क्योंकि इसमें धार्मिक भावना की पूर्णतया कमी है। धर्म में एक श्रद्धा, आत्मसमर्पण तथा एक शक्तिशाली सत्ता पर विश्वास रहता है लेकिन जीववाद में ये सारी बातें नहीं पाई जाती है। फिर धर्म में पराशक्ति की अपेक्षा होती है। धर्म मनुष्य और पराशक्ति के बीच एक संबन्ध है। मानव का पराशक्ति के प्रति प्रतिक्रिया ही धर्म है। लेकिन जीववाद में पराशक्ति का विचार नहीं मिलता है।

टायलर के अनुसार जीववाद धर्म की उत्पत्ति का कारण है, आलोचकों का कहना है कि यह धर्म नहीं बल्कि एक आदिम दर्शन है। आलोचकों का कहना है कि जीववाद में हिंसक जानवरों जैसे - बाघ, साँप इत्यादि की पूजा होती है। आलोचकों का कहना है कि अत्यधिक भयप्रद जीवों की आराधना का विषय मानने के फलस्वरूप इसे धर्म न कहकर दुर्बलतावाद कहना ज्यादा उचित होगा।